हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL6**

निर्धारित समयः तीन घंटे ***Time allowed: Three Hours***	*अधिकतम अंकः 250* ***Maximum Marks: 250***

नाम (Name): विक्रम ...

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 17/04/17

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

लिखे गए उत्तर अच्छे हैं। अभ्यास करते रहें।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 89

टिप्पणी (Remarks):

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) "सतगुरु लई कमाँण करि बाँहण लागा तीर।
एक जु बाह्या प्रीति सूँ भीतरि रह्या सरीर।।"

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पद्यावतरण भक्तिकाल के निर्गुण काव्यधारा के शिरोमणि 'कबीरदास' द्वारा रचित 'बीजक' नामक ग्रंथ के 'सतगुरु को अंग' से उद्धृत है। इसमें सतगुरु की महिमा का बखान तथा उसके द्वारा प्रदत्त ज्ञान एवं प्रेम का वर्णन किया गया है।

व्याख्या - कबीरदास जी कहते हैं कि सतगुरु ने धनुष लेकर या उठाकर मुझे साधकर ऐसा तीर चलाया कि मेरे अन्तःस्थल को छू गया तथा प्रेम की धार बह पड़ी और मुझे तत्व ज्ञान या वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति हुई।

काव्य-सौन्दर्य -

- कबीर दास जी गुरु नहीं सतगुरु की बात करते हैं क्योंकि गुरु तो तथ्य, ज्ञान ही देता है परन्तु सतगुरु नैतिकता आधारित ज्ञान देकर जीवन को ऊर्जा से भर देता है।
- कबीर दास ऐसे निर्गुण ब्रह्म को मानते हैं परन्तु उन्होंने

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रेम एवं भक्ति को पर्याप्त महत्व दिया है।

- भाषा इनकी सधुक्कड़ी तथा पंचमेल खिचड़ी है।
- दोहे जैसे छोटे छंद में परिपूर्णता एवं समन्वयवादी अर्थ को पिरो दिया है।
- हिंदी भाषा शब्द का प्रयोग आधुनिक काल की देन है परन्तु कबीर उसी समय इसका प्रयोग कर रहे थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।
मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।
बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।
जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।
सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश सगुण परम्परा के कृष्ण भक्त कवि सूरदास के ग्रंथ सूरसागर के 'भ्रमरगीत सार' से लिया गया है। इसमें सूरदास जी राधा के सौंदर्य तथा कृष्ण प्रेम में उनकी लीनता का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या - सूरदास जी कहते हैं कि राधा ने अपने वियोग को दूर करने के लिए जैसे ही वीणा वादन प्रारंभ किया उसके प्रभाव से सूर्य के रथ के हिरन आगे नहीं बढ़ रहे तथा चंद्रमा का ढलना नहीं हो रहा इससे रात्रि का समय बढ़ गया है जब से श्रीकृष्ण मथुरा गये हैं तब से राधा एवं गोपियाँ परेशान हैं, शीतल चंद्रा अग्नि की भाँति तपता हुआ प्रतीत हो रहा है जैसे भला धीरज रखा जाये अंत में सूर कहते हैं प्रभु आपके दर्शन के बिना सब झूठा है सारे प्रयत्न बेकार हैं।

काव्य सौंदर्य -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- भ्रमरगीत सार विप्रलंभ श्रृंगार का अद्भुत उदाहरण है जिसमें विरह की सभी स्थितियां मिल जाती हैं।
- इन पंक्तियों में उपमा अलंकार है।
- भाषा, ब्रज है जो माधुर्य गुण से परिपूर्ण है।
- छंद के स्तर पर ये गेय पद है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जाने दो वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पाठ्येय पद्य प्रगतिवादी कवि नागार्जुन की प्रकृति संबंधी रचना 'बादल को घिरते देखा है' से लिया गया है। इन पंक्तियों में नागार्जुन हिमालय का यथार्थवादी अंकन कर रहे हैं।

व्याख्या - नागार्जुन कहते हैं कि उनसे पहले के कवियों ने जो हिमालय पर पार्वती, शंकर, कुबेर के वास की कल्पना की थी वह सब कल्पित था वे आगे कहते हैं कि मैंने तो भयंकर सर्दियों में कैलाश पर्वत की चोटी पर महामेघ को झझानिल रूप में घिरते देखा है तथा जहां बादल गरज-गरज कर भिड़ रहे हैं तथा चारों ओर से घेर रहे हैं।

काव्य-सौंदर्य -

— इन पंक्तियों में नागार्जुन हिमालय से जुड़ी मान्यताओं एवं कल्पनाओं पर चोट करते हैं तथा आँखों देखे यथार्थ की स्थापना।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- कुछ प्रगतिवादी समीक्षक इन पंक्तियों पर प्रतीकात्मकता आरोपित करते हैं कि ये बादलों का घिरना मार्क्सवादी क्रांति का प्रतीक है - परन्तु ऐसा नहीं है।

- भाषा बहुत प्रवाहमयी है तथा तत्सम शब्दों की प्रधानता है।

- 'बिम्ब प्रधान' पंक्तियाँ हैं जो पूरी कविता ही चलचित्र देखने का अनुभव देती है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) मुझे स्मरण है:
और चित्र प्रत्येक
स्तब्ध, विजड़ित करता है मुझ को।
सुनता हूँ मैं
पर हर स्वर-कम्पन लेता है मुझ को मुझ से सोख-
वायु-सा नाद-भरा मैं उड़ जाता हूँ...

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियां प्रयोगवाद के जनक 'अज्ञेय' की लंबी कविता 'असाध्य वीणा' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में प्रियंवद वीणा को साधने में अपने अहं का विलयन कर रहा है तथा उस मौन/महामौन को अपने भीतर स्वरों के रूप में सुन रहा है।

व्याख्या - अज्ञेय इन पंक्तियों में बताते हैं कि केशकम्बली प्रियंवद अपने अहं का विलयन करने के लिए वीणा के समक्ष आत्मनिवेदन के भाव से खड़ा है वह कहता है मुझे याद है कि प्रत्येक चित्र किरीट तरु या महामौन का मुझे चकित एवं विजड़ित करता है और मैं ऐसा सुन रहा हूं कि प्रत्येक कम्पन मुझको सोख ले रहा है और मैं वायु में विलीन करता हुआ उड़ता जा रहा हूं सार यह है कि प्रियंवद ने जब अपने को वीणा को सौंप दिया तो उसे सत्य के साक्षात्कार के दौरान उसे ऐसी अनुभूतियां हो रही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्य सौंदर्य -

- इन पंक्तियों में प्रियंवद के अंतर्मन को चित्रित कर उनके अंतर्द्वन्द्व को दर्शाया गया है।
- 'गाढ़ु सा नाद भरा' में उपमा अलंकार है।
- अज्ञेय की रचनाओं में भाषा एक निर्णायक तत्व रहा है अलंकारिता की भाषा तो तत्सम्मी है परन्तु इन पंक्तियों में तत्समता की अधिकता है।
- यह ~~अनु~~ 'अनुभूतिपरक शैली कविता' है इसमें जेन बुद्धिज्म का प्रभाव निरन्तर दिखता है।

Gud 4/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) पिस गया वह भीतरी
औ' बाहरी दो कठिन पाटों बीच,
ऐसी ट्रैजेडी है नीच!!
बावड़ी में वह स्वयं
पागल प्रतीकों में निरंतर कह रहा
वह कोठरी में किस तरह
अपना गणित करता रहा
औ' मर गया...

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश प्रगतिवादी कवि 'मुक्तिबोध' की कविता 'ब्रह्मराक्षस' से लिया गया है। इस पंक्तियों में मुक्तिबोध बताते है कि ब्रह्मराक्षस विवेचनात्मक या अतिरेकवादी पूर्णता प्राप्त करने के चक्कर में कैसे उलझता है और मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

व्याख्या - मुक्तिबोध बताते हैं कि ब्रह्मराक्षस अंधेरी बावड़ी में बैठकर अपना गणित करता है तथा ऐसे उलझन में फंस गया कि वह उन कठिन पाटों के बीच से निकल नहीं पाया अर्थात अन्तर्द्वन्द्व इतना भयंकर था कि उसकी मृत्यु तय थी वह बावड़ी में पागल की भांति अपने से प्रश्न एवं उत्तर ही करता रहा था। परन्तु मुक्तिबोध उसकी मृत्यु को एक ट्रैजेडी कहते हैं।

काव्य सौंदर्य -

— 'ब्रह्मराक्षस' कविता में ~~मध्यवर्गी~~ 'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी' का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

प्रतीक है जो नैतिक मन एवं व्यावहारिक मन के बीच संतुलन न साध सका तथा तनाव में रहा।

— वास्तव में जब व्यक्ति अपने ऐतिहासिक दायित्वों को न निभा पाये तो ऐसी मृत्यु स्वाभाविक है।

— इन पंक्तियों में भाषा तत्सम है तथा लय निरन्तर बनी हुई है।

- 'ट्रैजेडी' जैसे विजातीय शब्दों का प्रयोग हुआ है।

- बिम्बात्मक प्रधान - दृश्य बिम्ब है।

- पूरी पंक्तियाँ प्रतीकात्मक है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'असाध्यवीणा' 'सृजन तत्त्व' की गहन व्याख्या करने वाली कविता है- इस कथन के परिप्रेक्ष्य में इस कविता पर विचार कीजिए। 20

'असाध्यवीणा' अज्ञेय की प्रतिनिधि कविता है जिसमें अज्ञेय पर 'जेन बुद्धिज्म', इलियट के परम्परा एवं निर्वैयक्तिकता सिद्धांत, अस्तित्ववाद आदि का प्रभाव दिखता है। ~~इसी~~ इसकी कथा का आधार एक जापानी कथा है।

इसमें अज्ञेय ने जिस बात को प्रमुखता से उठाया है वह है 'सृजन तत्व की व्याख्या' जिसके क्रम में वह चार तत्वों द्वारा सृजन की पूर्ण व्याख्या करते है - सृजन की अर्हता, सृजन की प्रक्रिया, सृजन का स्वरूप तथा सृजन का प्रभाव।

सृजन की अर्हता के अंतर्गत अज्ञेय बताते हैं कि पहले के वीणकार ज्ञानी गुणी तो थे परन्तु अहंकार से भरे थे इसी संदर्भ में राजा कहता है-

'मेरे हार गये सब जाने माने कलावन्त
सब की विद्या हो गयी अकारथ दर्प चूर
कोई ज्ञानी गुणी इसे न साध सका।'

इसलिए सृजन की अर्हता के लिए ज्ञान व गुण के अतिरिक्त अहंकार का विलयन तथा आत्म निवेदन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का भाव अति आवश्यक है।

इसीलिए सृजन की प्रक्रिया में प्रियंवद अपने 'अहंकार का' विलयन करता है तथा अपने को शोधता है और आत्मनिवेश के स्तर पर पहुँचता है —

'पर उस स्पन्दित सन्नाटे में
मौन प्रियंवद साध रहा था वीणा
नहीं स्वयं अपने को शोध रहा था
x x x
सौंप रहा था उसी किरीटी तरु को।'

आगे अज्ञेय सृजन तत्व के स्वरूप को भारतीय परम्परा के अनुरूप 'ब्रह्मानन्द सहोदर' ही बताते हैं वह कहते हैं कि —

'अवतरित हुआ संगीत ~~स्व~~
स्वयंभू
जिसमें सोता है अखण्ड
अशेष प्रभामय
ब्रह्म का मौन'

अंत में सृजन के प्रभाव को स्पष्ट करते हुए अज्ञेय बताते हैं कि इसका प्रभाव सभी पर अपने - अपने सन्दर्भ के अनुकूल पड़ता है। राजा, रानी, प्रजा, माता सभी पर यह असर है —

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

"डूब गये सब एक साथ

सब अलग-अलग एकाकी पार तिरे

" " "

युग पलट गया।"

अर्थात अपने स्वधर्म के अनुरूप कार्य करने से व्यक्ति को आत्म संतोष तो मिलता ही है साथ ही वह युग निर्माण में भी योगदान देता है।

इस प्रकार इस कविता में सृजन तत्व की व्याख्या पूर्णता एवं गहनता के साथ की गई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष' ब्रह्मराक्षस कविता का केन्द्रीय स्वर है।" विवेचन कीजिए। 15

'ब्रह्मराक्षस' मुक्तिबोध के काव्यसंकलन 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' में संकलित प्रतिनिधि कविता है। वास्तव में मुक्तिबोध के काव्य में मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष केन्द्रीय स्वर रहा है तथा ब्रह्मराक्षस उनका प्रिय प्रतीक।

इस कविता में भी ऐसा ही आत्मसंघर्ष दिखता है। मुक्तिबोध के अनुसार बुद्धिजीवी तीन प्रकार के होते हैं पहले क्रीतदास हैं जिनकी बुद्धि बिक चुकी है दूसरे बुद्धि या समाज के साथ 'अनंग' रहते है और तीसरे 'आत्मचेतस व विश्वचेतस' होते हैं इनका नैतिक मन विश्वचेतस परंतु व्यावहारिक मन आत्मचेतस होता है और यही बुद्धिजीवी भयंकार तनाव व द्वन्द्व में जीते हैं जिसे कविता में 'विश्वचेतस बे बनाव --- प्राणमय अनबन' के रूप में संबोधित किया गया है।

वास्तव में यह संघर्ष इसलिए होता है कि ये बुरे एवं अच्छे का न होकर 'अच्छे व बहुत अच्छे' के बीच का होता है _

'बुरे - अच्छे बीच का नहीं
अच्छे - अधिक अच्छे के बीच का संगर'

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

जिसके कारण आत्मचेतस से विश्वचेतस होना चाहता है बुद्धिजीवी परन्तु हो नहीं पाता।

इसके अतिरिक्त वह अपने जीवन में गणित जैसी वस्तुनिष्ठता तथा अतिरेकवादी पूर्णता चाहता है जो व्यावहारिक धरातल पर संभव नहीं हैं परन्तु इसमें असफलता भी मिलती है तो वह भी महत्वपूर्ण न प्यारी लगती है —

'अतिरेकवादी पूर्णता —— कि ये व्यथाएं बहुत प्यारी हैं।'

अंत में ब्रह्मराक्षस का संघर्ष अपने अंदर ही अंदर चलता है जिसे प्रतीकात्मक रूप में बावड़ी, जल, उनकी सीढ़ियां आदि द्वारा दिखाया गया है —

'खूब ~~जीना~~ ऊंचा एक जीना साँवला
उसकी अंधेरी सीढ़ियां
एक चढ़ना और उतरना
पुनः चढ़ना औ' लुढ़कना'

इस प्रकार ब्रह्मराक्षस या बुद्धिजीवी 'दो कठिन पाटों के बीच पिस जाता है'। ये अन्तः संघर्ष वास्तव में अपने ऐतिहासिक दायित्व न निभा पाने के कारण उत्पन्न हुआ है इसीलिए मुक्तिबोध 'मैं ब्रह्मराक्षस का सजल उर शिष्य'

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

होना चाहिए।' कहता है।

स्पष्ट है कि इस कविता में व्यक्त आत्मसंघर्ष शहरी मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का है जो तत्कालीन परिस्थितियों का शहरी अकेलापन, आत्मनिर्वासन, अजनबीपन का शिकार है एवं हद तक यह आत्मसंघर्ष स्वयं मुक्तिबोध का ही है।

Good 9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) "'बादल को घिरते देखा है' कविता नागार्जुन के शिल्प कौशल का अप्रतिम उदाहरण है।" विवेचन कीजिए। 15

नागार्जुन प्रगतिवादी कवि हैं परन्तु इस कविता में वह प्रकृति का यथार्थवादी अंकन करते हैं यद्यपि प्रगतिवादियों ने इस पर प्रतीकात्मकता थोप दी है परन्तु ऐसा है नहीं। यह संवेदना के अतिरिक्त शिल्प के धरातल पर अति उत्कृष्ट रचना है।

<u>काव्य रूप</u> - यह काव्य रूप की दृष्टि से लंबी कविता है तथा इसमें गेयता बनी है ~~...~~ इसमें चकवा-चकई प्रसंग, किन्नर प्रसंग, कस्तूरी मृग प्रसंग आदि महत्वपूर्ण हैं।

<u>भाषा</u> - भाषा इसमें तत्समी है ~~परन्तु~~ क्योंकि हिमालय के औदात्य का अंकन इसी भाषा में संभव था परन्तु तत्समी होने पर भी प्रवाह गजब का है साथ ही तद्भव एवं देशज शब्द पर्याप्त मात्रा में आये हैं जैसे - पगली, सोच आदि।

मुहावरे तथा लोकोक्तियों का प्रयोग भी यथास्थान किया है ताकि चमत्कारी प्रभाव उत्पन्न हो गया है।

<u>बिम्ब</u> - पूरी रचना बिम्बात्मकता को धारण करती है ये

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पाठक के मन पर चलचित्र की भांति अंकित हो जाती है कोमल, विराट, दृश्य, स्पृश्य सभी प्रकार के बिम्ब हैं –

विराट बिम्ब – 'महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है।'

कोमल बिम्ब – 'बालारुण की मृदु किरणें थी मंद मंद था
अनिल बह रहा।'

प्रतीक – कुछ समीक्षकों ने इसकी प्रतीकात्मक व्याख्या की है तथा बादलों का घिरना समाजवादी क्रांति का घिरना है, कस्तूरी मृग की बेचैनी सर्वहारा की बेचैनी है तथा बादलों का गरजना, भिड़ना मार्क्सवादी क्रांति की पूर्व घोषणा है परन्तु ये प्रतीक लादे गये है क्योंकि कवि उद्देश्य हिमालय सौंदर्य का वस्तुनिष्ठ वर्णन करना है।

छंद या लय – छायावाद के बाद छंद तो कविता से गायब हो गये थे परन्तु लय बनी हुई थी इस कविता में 'बादल को घिरते देखा है' पंक्ति का प्रयोग टेक की तरह हुआ है। चेतना प्रवाह शैली का भी प्रयोग कवि ने किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

साथ ही साथ चकवा-चकई प्रसंग में 'दुरार्थ-अन्वय' दिखता है क्योंकि आठ पंक्तियों के बाद अर्थ खुलता है।

इस प्रकार शिल्प की दृष्टि से यह नागार्जुन की समन्वयवादी दृष्टि का परिणाम है जो सुन्दर-असुंदर तथा गुलाब एवं गेंदू दोनों को जीवन के लिए महत्वपूर्ण मानता है।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'असाध्य वीणा' की काव्यभाषा का अनुशीलन करते हुए उसकी विशिष्टताओं को रेखांकित कीजिए। 20

अज्ञेय की पहचान जिस कारण से साहित्य जगत में अधिक स्थापित है वह है उनके 'भाषा संबंधी प्रयोग'। वास्तव में अज्ञेय कहते है - 'मैं उन लोगों में से हूं, शायद जिनकी संख्या दिन व दिन कम होती जा रही है जो काव्य में भाषा को अत्यधिक महत्व देते है।'

यही बात असाध्यवीणा में भी दिखती है। असाध्यवीणा की प्रसिद्धि का आधार केवल संवेदना ही नहीं अपितु भाषा संबंधी प्रयोग भी रहे हैं। भाषा में अज्ञेय सबसे ज्यादा महत्व शब्दों को देते हैं वह कहते है - 'काव्य में सबसे महत्वपूर्ण शब्द होते हैं अंत में यही बात बच रहती है कि शब्द ही काव्य है।'

असाध्यवीणा में भाषा के स्तर पर तद्भव शब्दावली का सर्वाधिक प्रयोग किया गया है क्योंकि तद्भव भाषा ही वास्तव में अभिजात एवं साधारण का मेल कराती है तथा दोनों के बीच सेतु का कार्य करती है -

'पर उस स्पन्दित सन्नाटे में
मौन प्रियंवद साध रहा था वीणा'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अतिरिक्त तत्सम शब्दों का प्रयोग भी पर्याप्त मात्रा में हुआ है -

'अनतीत हुआ संगीत
स्वयंभू
जिसमें सोता है अखण्ड
अशेष ब्रह्माण्ड'

असाध्यवीणा कविता में शब्दों का ध्वन्यात्मक प्रभाव गजब का है जिससे अर्थ अपने आप व्यक्त होने लगता है जैसे - 'महुए का चुपचाप टपकना', 'खुटखुट', 'चिहुँक', वर्षा की बूंदो की पटपट आदि।

इसके साथ ही काव्य भाषा में दो तत्वों प्रतीक एवं बिम्ब ने इसकी दीर्घायु को बढ़ाया है। प्रतीक के स्तर पर वीणा कला की प्रतीक है तथा प्रियंवद कलाकार का। बिम्बों के स्तर पर पूरी कविता चित्रात्मक है जिसमें 'केशकम्बली गुफा-गेह' जैसे विराट तो 'खग शावक की चिहुँक' जैसे कोमल बिम्ब हैं।

इस कविता पर पश्चिम जेन बुद्धिज्म, सार्त्र के अस्तित्ववाद का प्रभाव पड़ा है परन्तु कहीं भी शब्दावली के स्तर पर समझौता नहीं किया गया है, ये दर्शाता है कि

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कविता में अन्य कठिन शब्दों या पारिभाषिक शब्दों को नहीं लाया गया है।

इस प्रकार अज्ञेय ने काव्य भाषा के लिए जिन प्रतिमानों को गढ़ा है उसे प्रयोग के स्तर पर यह सफल सिद्ध हो।

11½/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में कवि ब्रह्मराक्षस का सजल-उर-शिष्य क्यों होना चाहता है? विश्लेषण कीजिए। 15

'ब्रह्मराक्षस' कविता मुक्तिबोध की प्रतिनिधि कविता है। यह एक प्रतीकात्मक कविता है तथा इसमें निहित प्रतीकों की व्याख्या समीक्षकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से की है। वास्तव में यह 'ब्रह्मराक्षस' उस ब्राह्मण का प्रतीक है जो अपने ऐतिहासिक उत्तरदायित्वों को पूरा न कर पाने के कारण प्रेतयोनि में भटक रहा है।

एक दृष्टि से देखा जाये तो इस कविता में जिस मूल समस्या को उठाया गया है वह है व्यक्तित्व को न समझ पाने की समस्या जिसमें एक स्थान पर कहा गया है कि 'मैं उनसे उन दिनों होता मिला यदि' के अंतर्गत कहा जाता है कि यदि मुक्तिबोध या कवि ब्रह्मराक्षस से मिलते तो उनके व्यक्तित्व का अर्थ बताते। कि किसी भी समाज के लिए व्यक्तित्व का होना कितना आवश्यक है।

श्रीकांत वर्मा कहते हैं कि इसमें ब्रह्मराक्षस एवं उसका शिष्य दोनों ही मुक्तिबोध ही है वास्तव

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में मुक्तिबोध 'मैं ब्रह्मराक्षस का सजल उर शिष्य होना चाहता' के द्वारा ब्रह्मराक्षस के ज्ञान को प्राप्त करके उसकी मुक्ति करना चाहते हैं। क्योंकि 'ब्रह्मराक्षस का शिष्य' नामक कहानी में मुक्तिबोध ने बताया है कि जब तक ब्रह्मराक्षस के ज्ञान को कोई व्यक्ति नहीं लेगा तब तक उसकी मुक्ति संभव नहीं है।

6/15

गहराई लाएं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) 'हरिजन गाथा' कविता की अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालते हुए उसकी प्रासंगिकता का निर्धारण कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हरिजन गाथा कवि नागार्जुन की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) कविता ही हृदय को प्रकृत दशा में लाती है और जगत् के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है। भावयोग की सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत् के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, उसकी अलग भावसत्ता नहीं रह जाती, उसका हृदय विश्व-हृदय हो जाता है।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ निबंधकारों में शीर्ष पर विराजमान 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल' के काव्यशास्त्रीय निबंध 'कविता क्या है' से ली गई हैं। कविता का क्या महत्व है उसके बारे में शुक्ल जी विस्तार से बताते हैं।

व्याख्या - आचार्य शुक्ल कहते हैं ~~कि~~ कविता ही हमारे हृदय को स्वाभाविक दशा में लाती है तथा जगत में उसका प्रसार करती चलती है कविता के द्वारा ही व्यक्ति उस भावभूमि पर पहुंचता है जिसे मनुष्यता के सर्वोच्च स्तर के रूप में व्याख्यायित किया जाता है। इस स्थिति में मानव का जगत से एकीकरण एवं तादात्म्य हो जाता है तथा व्यक्ति जगत का अंग हो जाता है और उसकी चेतना विश्व चेतना हो जाती है।

रचनात्मक - सौंदर्य -

- इन पंक्तियों में शुक्ल जी ~~[illegible]~~ कविता के महत्व की व्याख्या कर रहे हैं तथा इसे मानव के लिए आवश्यक बताते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- 'कविता क्या है' एक विचारात्मक निबंध है जिसके द्वारा शुक्ल जी ने अपनी काव्यशास्त्रीय मान्यताओं को प्रस्तुत किया है जैसे अज्ञेय ने असाध्य वीणा में।
- भाषा की दृष्टि से तत्सम शब्दों की प्रधानता है तथा 'विचारों की गठ-गुम्फित परम्परा' दिखायी देती है।
- कविता का महत्व आज भी व्यक्ति को समाज से जोड़ने एवं संवेदनशील बनाने के लिए है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) कर्त्ता से बढ़कर कर्म का स्मारक दूसरा नहीं। कर्म की क्षमता प्राप्त करने के लिये बार-बार कर्त्ता ही की ओर आँख उठती है। कर्मों से कर्त्ता की स्थिति को जो मनोहरता प्राप्त हो जाती है उस पर मुग्ध होकर बहुत से प्राणी उन कर्मों की ओर प्रेरित होते हैं। कर्त्ता अपने सत्कर्म द्वारा एक विस्तृत क्षेत्र में मनुष्य की सद्वृत्तियों के आकर्षण का एक शक्ति केन्द्र हो जाता है।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश 'श्रद्धा एवं भक्ति' नामक निबंध से लिया गया है। श्रद्धा एवं भक्ति निबंध 'आचार्य शुक्ल' का मनोविकारपरक निबंधो में शीर्ष स्थान रखता है। इन पंक्तियों में कर्म करने वाले की महत्ता स्थापित की गई है।

व्याख्या - शुक्ल जी कहते हैं कि कार्य करने वाला ही वास्तव में समाज में महत्वपूर्ण स्थिति रखता है क्योंकि जब भी कार्य सम्पादित होता है तो वह ही करता है तथा उस से एक अपेक्षा भी सभी को होती है वास्तव में सद्कर्म करने वालों के प्रति श्रद्धा रखनी चाहिए क्योंकि इससे उन्हें कर्म करने की प्रेरणा मिलती है और वे ज्यादा से ज्यादा कार्यों को करके समाज को प्रभावित करते हैं और इससे कर्ता लोगों की आकर्षण शक्ति का केंद्र हो जाता है।

रचनात्मक - सौंदर्य -

— 'श्रद्धा एवं भक्ति' आचार्य शुक्ल का प्रतिनिधि निबंध है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा इसमें उन्होंने मनोभावों जैसे - श्रद्धा, भक्ति, प्रेम अंकन किया है।

- भाषा तत्सम है परन्तु प्रवाह होने के कारण अति सरल एवं बोधगम्य है।
- कर्ता अर्थात सद्कर्म करने वाले के प्रति निष्ठा रखी जाये तो अन्य व्यक्ति भी अच्छे कर्मों की ओर प्रेरित होते हैं।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) भारत समग्र विश्व का है, और सम्पूर्ण वसुन्धरा इसके प्रेम-पाश में आबद्ध है। अनादि काल से ज्ञान की, मानवता की ज्योति यह विकीर्ण कर रहा है। वसुन्धरा का हृदय–भारत–किस मूर्ख को प्यारा नहीं है?

<u>सन्दर्भ एवं प्रसंग</u> - प्रस्तुत गद्यावतरण महान नाटककार जयशंकर प्रसाद के प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक 'स्कन्दगुप्त' से लिया गया है। इसमें धातुसेन, जो कि श्रीलंका का निवासी है उसके द्वारा भारत का महिमा मंडन किया जा रहा है।

<u>व्याख्या</u> - धातुसेन कहता है कि भारत जैसा राष्ट्र संपूर्ण विश्व को ज्ञान, प्रेम की शिक्षा देता रहा है तथा यह समग्र विश्व का देश है पूरी पृथ्वी इसके प्रेम से परिपूर्ण है। प्राचीन काल से ही यह ज्ञान, मानवता, विज्ञान की ज्योति जला रहा है। वास्तव में भारत पृथ्वी का केंद्र बिन्दु है यह भला किसे प्यारा नहीं होगा अर्थात सभी को प्यारा है।

<u>रचनात्मक सौंदर्य</u> -

- विदेशियों द्वारा भारत की प्रशंसा करवाना एक उपयोगितावादी दृष्टि है इससे भारतवासियों में आत्मसम्मान बढ़ता है तथा आत्मगौरव की भावना आती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

- 'वसुन्धरा का हृदय- भारत' में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया गया है जो उनकी छायावादी दृष्टि का प्रमाण है।
- सांस्कृतिक उत्थान एवं नवजागरण में रवीन्द्रनाथ की अप्रतिम भूमिका है।
- 'मानवता की ज्योति' में वही बात दिखायी पड़ती है जिसके दम को लेकर आज 'एशिया' कहा जाता था।
- यह पंक्तियाँ भारत की 'वसुधैव कुटुम्बकम' की धारणा को मूर्त रूप दे रही है।

6/10

6 M

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation